

महिला सशक्तिकरण में संगीत की भूमिका

रवींद्र रामभाऊ इंगळे

संगीत विभागाध्यक्ष, कै. सौ. कमलताई जामकर महिला महाविद्यालय, जितुर रोड,
परभणी (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :-

नारी पृथ्वी की आदि शक्ति है, इसलिए भारतीय जीवन दर्शमें स्त्री को शक्ति का पर्याय मानकर उसे शक्तिरूपा कहा गया है। शक्ति के अभाव में आदिदेव शिव भी शव है, शक्ति के समाहित होने से ही शव शिव बनता है।

नारी परिवार समाज निर्माण की ऊर्जा का स्रोत है, इसकी शक्ति से ही परिवार और समाज की रचना होती है। सृजन और पोषण उसके नैसर्गिक दायित्व है। इसलिए किसी भी समाज की सभ्यता की कसौटी उस समाज में प्राप्त महिलाओं का दर्जा है। जिस समाज की महिलाएं जितनी अधिकार संपन्न और सम्मानित होगी वह समाज उतना ही श्रेष्ठ माना जाएगा। इसलिए “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः” यह आर्ष वाक्य बना।

नारी जाति में उत्थान से ही राष्ट्रको उन्नतीशील बनाया जा सकता है। यहां हमें संगीत का संबंध सोचना है। नारी संगीत की प्रेरणा है और संगीत ने नारी के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, संगीत मनुष्यको संस्कारी बनाता है। योग्य शिक्षित एवं संस्कारी माताएं ही योग्य एवं संस्कारी संतान को जन्म देकर उसे अच्छा व कर्मठ नागरिक बना सकती हैं। स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था आप मुझे केवल सौ अच्छी माताएं दिजिये। मैं भारतीय समाज का नक्शा ही बदल दूंगा। केवल संगीत में ही इन्सान को अच्छा बनाने की शक्ति है। प्राचीन काल से आज तक महिला सशक्तिकरण में संगीत (गायन, वादन एवं नृत्य) ने अहम भूमिका निभाई है। भारतीय इतिहास, पुराण तथा संगीत शास्त्र के ग्रंथों में वैदिक वाङ्मय में साहित्य ग्रंथों में महिला संगीतज्ञों की चर्चा लगातार हुई है। प्राचीन कालके ग्रंथों में अनेक स्थानों पर स्त्रियों द्वारा संगीत को जीविकोपार्जन का साधन बनाने के उल्लेख प्राप्त होते हैं। ये उल्लेख उस काल के महिला सशक्तिकरण में संगीत की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं। प्रथम शताब्दि में लिखे गये वात्सायन के कामसूत्र में स्त्रियों की काव्य, पुराण, नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि ६४ कलाओं में शिक्षा का वर्णन है। वैदिक काल में भी स्त्री को संगीत के अध्ययन एवं अभ्यास की सुविधा थी। अनेक संगीत विदुषी महिलाओं ने उस काल में संगीत ग्रंथों की रचना भी की।

उक्त ऐतिहासिक तथ्यों से स्पष्ट है कि वैदिक एवं पौराणिक काल से हिंदू काल तक नारी का इस कला में अव्दितिय स्थान रहा है। यदि हम अतीत के आईने में देखे तो आम्रपाली, पदमावती, रानी रुपमती,

गुजरी रानी आदि विदुषी इनमे संगीततज्ञ महिलाओं का अक्स दिखाई देगा। उक्त सहित अनेक संगीत सम्राज्ञियों ने अपनी अलग पहचान बनाई।

मुगलकाल में इन संगीत साधिकाओं को गणिका व देवदासी बनकर संगीत की सेवा करने पड़ी। एक समय ऐसा भी आया जब संगीत को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। श्रेष्ठ कलाकार भूखे मरने लगे। इस समय भी इन गायिकाओं, नर्तिकाओं एवं वादिकाओं ने तन, मन और धन सभी कुछ समर्पित करके संगीत सीखा और कला का दीप जलाते रखा। धीरे धीरे समय ने करवट ली। कहते हैं कि मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। संगीत की साधनारूपी मशाल ने इन साधिकाओं के जीवन को अलौकिक किया, इन्हे समाज में प्रतिष्ठा दिलाई। केवल संगीत में ही वह शक्ति है जिसने विकट से विकट परिस्थितियों में भी नारी को थामें रखा, फिर वह भक्त शिरोमणी मीराबाई की पारिवारिक व सामाजिक यातनाएं हो या फिर कोकिल कंठी विश्वविख्यात गायिका स्व. लता मंगेशकरजी की आर्थिक परिस्थितियां हो। संगीत ने सदैव ही स्त्री को सबल व शक्ति प्रदान की है, क्योंकि संगीत रूपी अमृत न सिर्फ नारी में बल्कि समूची मानव जाती में संजीवनी का संचार कर उसे स्फूर्ति देता है।

स्त्री कोमलता, सुकुमारता व सौंदर्य का प्रतिक है, उसने संगीत में अपनी भावनाओं की कोमलता, कंठ की मधुरता और हृदयकी सुकुमारता के दर्शन किये और वह संगीत और नृत्य में उत्तरोत्तर प्रगति करती गई।

सभ्यता के विकास के साथ सभ्रांत परिवारों की महिलाओं ने संगीत को जीवनमें अपनाया एवं जीविका का साधन बनाया। संगीत व्दारा उनके जीवन में आमूल आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन आया है, वे आर्थिक रूपसे सशक्त हुई हैं, संगीत ने उनके जीवनको सुख सुविधाएं प्रदान की। संगीत व्दारा वे अपने व्यवहारिक जीवन में सफल रही।

स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद भारत में स्त्रियों के जीवन में तेजीसे परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन में संगीत की अहम भूमिका रही है। हमारी वीरांगनाओं ने अपनी कला साधना से सर्वधर्म सदभाव तथा अनेकता में एकता का भाव जगाया है।

संगीत की हर विधा ने नारी को असीमित ऊर्जा, मान सम्मान, धन दौलत तथा इज्जत की मलिका बनाया है। फिर चाहे वह लोकसंगीत हो या सुगम संगीत, फिल्मी संगीत हो या शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, कथक हो या कथकली नृत्य, भरतनाट्यम हो या मणिपुरी नृत्य। संगीत की उपरोक्त सभी विधाओं में महिलाओं का प्रशंसनीय योगदान रहा है। नारी के इसी योगदान के लिए उसे पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण से लेकर भारतरत्न जैसे राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया है। आज समाज में संगीत एवं नृत्यका उच्च स्थान है।

संगीतद्वारा महिलाओं में आत्मविश्वास जागा है। आज आकाशवाणी, दूरदर्शन संगीत सम्मेलनों, स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में संगीतके क्षेत्र में महिलाओं ने अच्छी संख्या में सम्मानित स्थान प्राप्त किया है।

संगीत एक ऐसा विषय है जिसने समाज में विशेषतः बालिकाओं व महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक संगीत एवं नृत्य के क्षेत्र में विद्यार्थियों एवं शिक्षिकाओं की संख्या पर यदि नजर डाली जाय तो हम देखेंगे कि अधिकांश छात्राएं ही संगीत शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। अनेक महिलाएं उच्च कोटी की कलाकार हैं और देश विदेश में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर अपने देश का नाम रोशन कर रही हैं।

अनेक संगीत विदुषी महिलाएं संगीत के क्षेत्र में पुस्तक लेखन द्वारा संगीत के शास्त्र पक्षको समृद्ध बना रही हैं, अनेक महिलाएं अपने स्वयं के संगीत विद्यालय चला रही हैं। उक्त सभी क्षेत्रोंद्वारा महिलाओं ने आर्थिक व सामाजिक दृढ़ता प्राप्त की है।

संगीत को कैरियर के रूपमें अपनाकर वे आत्मनिर्भर बनी हैं, संगीत द्वारा जीविकोपार्जन करना उन्हें उनकी रुचि के अनुकूल प्रतीत हुआ। आर.एल. स्टेवन्सन के अनुसार जो व्यक्ती ललितकला का ज्ञाता है और उसीके द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता है, उसके लिए कोई ऐसा समय नहीं होता जो आनंददायक न हो। जीविकोपार्जन के लिए जितना आनंदमय यह काम है, उतना और कोई नहीं और इस प्रकार संगीत ने स्त्री को न सिर्फ आत्मनिर्भर बनाया बल्कि उसे आत्मानंद की अनुभूती कराते हुवे उसकी आत्माको भी सशक्त बनाया है।

संगीत और नारी एक दूसरे के पूरक हैं। संगीत ने नारी को और नारी ने संगीत को संभाला है। उपर हमने देखा कि हर युग में संगीत ने नारी को प्रतिष्ठा प्राप्त कराई, बदले में नारी ने भी संगीत का अस्तित्व बनाए रखने, उसे जिंदा रखने में अपने प्राणपनसे प्रयास किये। यह उसकी साधना और तपस्याही है कि समाज का तिरस्कार, बदनामी व आर्थिक विपन्नता के समय देवदासी व गणिका बनकर भी उसने संगीत का दामन नहीं छोड़ा। आदिकाल से लेकर आज तक उसने संगीत एवं नृत्य को अपने खून एवं पसिने से सींचा है। संगीत द्वारा समाज में उच्च स्थान प्राप्त करनेवाली कई सारी कलाकार महिलाएं हैं। जैसे- शास्त्रीय संगीत में भारतरत्न एम.एस.सुब्बालक्ष्मी, गंगुबाई हंगल, किशोरी अमोणकर, अश्विनी भिडे देशपांडे, कौशिकी चक्रवर्ती, परवीन सुलताना, देवकी पंडित, आरती अंकलीकर, शास्त्रीय वादन में अन्नपूर्णा देवी (सूरबहार), शरन रानी (सरोद), एन राजन (व्हायोलिन), जरीन दारुवाला (सरोद), डॉ अबान मिस्त्री (तबला)। शास्त्रीय नृत्यों में भरतनाट्यममें यामिनी कृष्णमूर्ती, वैजयंतीमाला, सोनल मानसिंह, हेमामालिनी। कथकमें सितारा देवी, रोशन

कुमारी, दमयंती जोशी, रोहिणी भाटे, उमा शर्मा, कुमुदीनी नाखिया। मणिपुरी नृत्यमें झवेरी बहने, चारु माथूर। फिल्म संगीत में लता मंगेशकर, आशा भोसले, उषा मंगेशकर, लोकसंगीत में अरुणा ईराणी, रेशमा आदि। ये तो केवल चंद उदाहरण हैं। लेकिन ऐसी कई ज्ञात अज्ञात महिला कलाकार हैं जिनके योगदान से संगीत कला समृद्ध हुई है।

संगीत द्वारा सशक्तिकरण का लाभ अधिकाधिक महिलाओं को मिल सके इसके लिए सरकार द्वारा भी कई सारे प्रयास किये गये। सरकार द्वारा हर राज्यमें महिला महाविद्यालयों की स्थापना की गई और उनमें संगीत विभाग अंतर्गत महिलाओं को संगीत सिखाने की व्यवस्था की गई।

जैसे- मगध महिला कॉलेज, पटना, बिहार, कनौरिया महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, रानी लक्ष्मीबाई महिला कॉलेज, इंदौर, मध्यप्रदेश, कै सौ कमलताई जामकर महिला महाविद्यालय, परभणी, महाराष्ट्र, क्वीन मेरी कॉलेज, चेन्नई, तमिलनाडू, धिरेंद्र महिला महाविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, रांची महिला कॉलेज, रांची, झारखंड, दौलतराम कॉलेज, नई दिल्ली, आर्या गर्ल कॉलेज, अंबाला, हरियाणा इत्यादि।

खास महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा मिले इस लिये महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

जैसे- बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली, राजस्थान, श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र, मदर तेरेसा महिला विश्वविद्यालय, कोडाईकॅनॉल, तमिलनाडू, जमशेतपूर महिला विश्वविद्यालय, जमशेतपूर, झारखंड, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भूवनेश्वर, उडिसा इत्यादि। इसके अतिरिक्त महिला संगीत अकादमी की स्थापना कर महिलाओं के संगीत क्षेत्र में योगदान को प्रोत्साहन दिया गया।

सारांश:-

महिला सशक्तिकरण में संगीत ने अहम भूमिका निभाई है। किंतु इसे बढ़ावा मिले और महिला कलाकारों की उन्नति के लिए समाज, सरकार व स्वयंसेवी संगठनों की सदभावना व सहयोग की भी आवश्यकता है। समाज एवं सरकार का यह सहयोग महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक शक्तिशाली कदम होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Reference Books)

1. भारतीय संगीत एवं महिला योगदान / Indian Music & Women's Contribution

1. "Women in Indian Music" – A. Raghavan
2. "Music and Musicians of India" – Dr. B.N. Goswami
3. "Sangeet Mein Nari Ka Yogdan" – Dr. Sudha Vashishth

4. "Hindustani Music: A Tradition in Transition" – Deepak Raja

5. "Women and Music in India" – Preeti Pande

2. भारतीय शास्त्रीय संगीत (गायन/वादन/नृत्य)

6. "Bharatiya Sangeet Ka Itihas" – Thakur Jaidev Singh

7. "Hindustani Sangeet Paddhati" – Vishnu Narayan Bhatkhande

8. "Sangeet Ratnakar" – Sharangadeva

9. "Natya Shastra" – Bharat Muni (नृत्य एवं संगीत का मूल ग्रंथ)

10. "Indian Classical Dance – Tradition in Transition" – Kapila Vatsyayan

3. महिला सशक्तीकरण / Women Empowerment

11. "Women Empowerment in India" – Dr. Shashi Sharma

12. "Women in Modern India" – Geraldine Forbes

13. "Gender and Society in India" – T. V. Sathyamurthy

14. "Nari Shiksha aur Shashaktikaran" – Dr. Madhu Vajpayee

4. समाजशास्त्र, संस्कृति एवं नारी अध्ययन

15. "The Status of Women in India" – Altekar A.S.

16. "Feminism in Indian Culture" – Dr. Neera Desai

17. "Nari : Samaj aur Sanskriti" – Dr. Sushila Singh

18. "Women and Culture" – Patricia Uberoi

5. प्रसिद्ध महिला कलाकारों पर आधारित पुस्तकें

19. "MS Subbulakshmi – The Voice Divine" – T.J.S. George

20. "Lata Mangeskar: A Biography" – Harish Bhimani

21. "Gangubai Hangal: Voice of Tradition" – Malan Hazarika

22. "Ustad Alladiya Khan and His Contribution" – Dr. Ashwini Bhide Deshpande (महिला दृष्टीकोण से भी उपयोगी)